फरीदाबाद

मजदूर समाचार

दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा

नई सीरीज नम्बर 85 | जुलाई 1995

इस अंक में

- आप-बीती एस्कोर्ट्स वरकर की
- ईस्ट इंडिया कॉटन मिल
- होती लाल
- राउरकेला स्टील प्लान्ट
- विक्टोरिया जूट मिल
- एस्कोर्ट्स में मीत

अनिवार्य को, रुटीन को एक्सीडैन्ट कहते हैं (1)

दिल्ली बारडर पर सराय, ओल्ड फाटक, बाटा फाटक, प्याली चौराहा, स्काईटोन रोड़, मुजेसर फाटक, 24-25 नहर पुल, बल्लबगढ स्टेशन, मथुरा रोड़, कटलर हैमर रोड़ – सब जगह अखबार माँगने वाले मजदूरों को अखबार पकड़ाते समय उनके हाथों पर पड़ती निगाहों में आती कटी उँगलियों - कटे हाथों की संख्या ने हमें चौंकाया है। इस सम्बन्ध में हमने कई डॉक्टरों, ई एस आई लोकल आफिस - डिस्पैन्सरी - अस्पताल कर्मचारियों और फैक्ट्री व वर्कशॉप मजदूरों से कुछ बातें की हैं। कार्यस्थल पर मजदूरों के चोट लगने, घायल होने, मरने के मामलों में मैनेजमेंटें धोखाधड़ी बहुत करती हैं, खुलेआम करती हैं का तथ्य अनुभवियों - भुक्तभोगियों से बातचीत में साफ-साफ उभर कर आया। अंग भंग के केसों की संख्या भी बरसों अनुभव वाले ई एस आई डॉक्टर ठीक से नहीं बता सकते क्योंकि उनके मुताबिक 50 प्रतिशत से ज्यादा मामलों में इलाज नर्सिंग होम्स में होता है। प्राप्त जानकारियों के आधार पर हमारा अनुमान है कि फरीदाबाद में हर रोज फैक्ट्रियों - वर्कशॉपों में काम करते समय 200 मजदूरों को ऐसी चोटें लगती हैं, इतने घायल होते हैं कि उनका डॉक्टरी इलाज जरूरी हो जाता है। वे चोटें जिन्हें कार्यस्थल पर ही रंग-रोगन लगा कर, खाँस कर - चक्कर खा कर शरीर द्वारा स्वयं झेला जाता है, फैक्ट्रियों के इस शहर में उनकी संख्या प्रतिदिन हजारों में है। डेली के उन वाकयों की तादाद तो और भी ज्यादा है जिनमें मजदूर बाल-बाल बचते हैं। अपने अनुभवों - विचारों की जानकारी हमें भी दें ताकि इस अखबार के जरिये कुछ और मजदूर भी उनसे वाकिफ हों। और, जन्मदिन - बरसी किसी महाबलि - महाज्ञानी - महाशक्ति की मनाने की बजाय अपनी कटी उँगली - कटे हाथ - स्टीम पाइप फटने से जल कर मरे मजदूर साथी की मनायें ताकि यादें ताजी बनी रहें और हमारे कटने - मरने पर कुछ लगाम लगाने के लिये हमें सोचने व कदम उठाने के लिये सचेत करती रहें।

कम से कम लागत पर अधिक से अधिक उत्पादन करवाना प्रत्येक मैनेजमेंट की अनिवार्य आवश्यकता है। हर जगह के मजदूरों के लिये इसका मतलब है तनखा कम, काम ज्यादा, सुरक्षा उपायों पर खर्च कम, कार्य की तीव्रता-तीक्ष्णता अधिक, वरकर कम। मशीनों - उपकरणों व बिल्डिंगों के रख-रखाव पर खर्च कम करने और लापरवाही बरतने, खस्ता होती मशीनों - उपकरणों तथा कमजोर पड़ते शरीरों पर वर्क लोड बढाने, कमजोर होते जा रहे तन - मन के साथ शिफ्ट के बाद ओवर टाइम - पार्ट टाइम काम करने की बढती मजबूरी – इन सब का अनिवार्य नतीजा है कार्यस्थलों पर बढती संख्या में मजदूरों का घायल होना। छोटी-छोटी चोटें मजदूरों को रोज लगती हैं और बड़ी चोटें इसी सिलसिले का अगला पड़ाव होता है। हर किसी का हाथ, हर किसी की जान हर समय दाँव पर लगी रहती है। जहाँ भी काम करेंगे वहीं यह खतरे हैं इसलिये हर जगह विरोध की जरूरत है, हर वरकर को विरोध के कारगर तरीके जानने - समझने की आवश्यकता है।

★ डॉक्टरों के अनुसार नये-नये युवा वरकरों को चोट ज्यादा लगती हैं। शाम को ज्यादा वरकर घायल होते हैं। गर्मियों में केसों की संख्या बहुत ज्यादा हो जाती है।

जिन्हें 18 का बताया जाता है उनमें से कई तो 15-16 साल के लगते हैं। कइयों को वहाँ काम करते महीने से भी कम समय हुआ होता है। फरीदाबाद में जगह-जगह फैली वर्कशॉप हों चाहे यहाँ लगी हजारों छोटी-बड़ी फैक्ट्रियाँ, कटे हाथ के साथ जिन मजदूरों को स्टाफ के लोग ई एस आई लाते हैं उनके वे फार्म नम्बर 86 भरते हैं। काम करते समय वरकरों के घायल होने - मर जाने के कानूनी दायित्व से मैनेजमेंटों को मुक्त करने के लिये ई एस आई कारपोरेशन बनाया गया है। यह तस्दीक करने के लिये कि चोट काम करते समय लगी और घायल मजदूर ई एस आई के दायरे में है, मैनेजमेंट द्वारा फार्म 86 पर दस्तखत पर्याप्त माने जाते हैं। इन फार्मों की कोई काउन्टर चेक नहीं है और मैनेजमेंटे - वर्कशॉपवाले खुलेआम धोखाधड़ी करते हैं। फार्म 86 पर NYA (ई एस आई का आई पी नम्बर अभी नहीं दिया गया है) की भरमार पर डॉक्टरों द्वारा कुछ एतराज होने लगा तो इन लोगों ने फार्मों पर कोई भी आई पी नम्बर अपनी मर्जी से लिखना शुरु कर दिया। यह इसलिये कि कैजुअल वरकरों और ठेकेदारों के मजदूरों की तनखा से ई एस आई के नाम पर काटे पैसे फरीदाबाद में बड़े पैमाने पर मैनेजमेंटें अपनी जेब में रख लेती हैं, ई एस आई में जमा नहीं कराती। गम्भीर केस होने पर रिश्वत के जरिये पिछली तारीख में नाम दर्ज करवाना यहाँ आम बात है। फरीदाबाद में इस समय फैक्ट्रियों - वर्कशॉपों में काम कर रहे डेढ लाख कैजुअल और ठेकेदारों के वरकरों में से एक हजार के पास भी ई एस आई कार्ड नहीं हैं। हजारों जगहों का मामला है और कैजुअल व ठेकेदारों के मजदूरों को आज यहाँ तो कल वहाँ खटना ही होता है – जहाँ भी जाते हैं ऐसा ही पाते हैं इसलिये मैनेजमेंटों के इस व्यवहार पर कुछ लगाम लगाने के लिये जगह-जगह से कम्पलेन्टों का होना आवश्यक है। जिस फैक्ट्री के मजदूर कम्पलेन्ट करें वे अपने हाथ से लिखने की बजाय अन्य फैक्ट्री के वरकर से लिखवायें क्योंकि दफ्तरों से कागजात मैनेजमेंटों के पास पहुँच जाते हैं। ई एस आई कार्ड नहीं देने की शिकायत लिखित में **डिप्टी रीजनल डायरेक्टर बी एस सन्धु, रीजनल आफिस ई एस आई, पँचदीप भवन, सैक्टर-16, फरीदाबाद** को करें और फिर रिमाइन्डर भी जरूर दें।

एस्कोर्ट्स हो चाहे क्लच आटो, कैजुअल वरकरों और ठेकेदारों के मजदूरों से अक्सर मशीन आपरेट करवाई जाती हैं। अनट्रेन्ड होते हुये भी यह वरकर सुपरवाइजर की धौंस में यह करते हैं। हाथ गँवा देना इसके अनिवार्य परिणामों में है। कैजुअल वरकरों और ठेकेदारों के मजदूरों को **"नहीं"** कहना सीखना पड़ेगा। हाथ गँवाने से बेहतर है सड़क नाप कर अन्य जगह काम ढूँढ लेना। और फिर, ऐसे "नहीं" की बढती तादाद मैनेजमेंटों की इस प्रैक्टिस पर कुछ लगाम लगाने का काम करेगी। हाँ, एक दिन की ध्याड़ी भी ठेकेदार - वर्कशॉपवाला - मैनेजमेंट नहीं दे तो इसकी लिखित शिकायत 15 सैक्टर में डी एल सी को अथवा क्षेत्र के लेबर इन्सपेक्टर को जरूर करें। यह अपने हाथ से लिख कर करें ! 50-100 रूपये तक हड़पने वाले इन लोगों को बढती संख्या में वकील की फीस और रिश्वत में एक के लिये दस खर्च करने पड़ेंगे तब इनके इस व्यवहार पर कुछ लगाम लगेगी।

कैजुअल व ठेकेदारों के वरकरों के लिये फैक्ट्रियों - वर्कशॉपों में 12 घन्टे रोज काम करना फरीदाबाद में आम बात है और अक्सर यह प्रतिदिन 16 घन्टे काम करते हैं। परमानेन्ट वरकर भी ओवर टाइम के चक्कर में रहते हैं। शाम को चोट लगने की संख्याओं का बढना थके तन और मन से इनका सम्बन्ध सीधे-सीधे जाहिर करता है। दो पैसे के चक्कर में 12-16 घन्टे काम का मतलब हाथ गँवाने - जान गँवाने की सम्भावना को बढाना है। इससे तो पानी जैसी पतली दाल भी अच्छी है परन्तु बेहतर तो तनखा बढवाने के लिये कदम उठाना है। जगह-जगह बिखरे पड़े सरकारी आँकड़ों के आधार पर भी कह सकते हैं कि आज दस हजार रुपये महीना से कम तनखा का मतलब पति - पत्नी - बच्चों द्वारा ध्याड़ी पर काम करने के संग-संग उनका ओवर टाइम - पार्ट टाइम काम करना जरूरी हो गया है। किसी पर स्वार्थी - लालची - कंजूस के फिकरे कसने की बजाय हमें इस तथ्य पर गौर करने की जरुत है।

(बाकी पेज दो पर)

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद -121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच है)

खुद से बात करना, अपने आप से कहानी कहना हम सब की आदत में शुमार है.। लेकिन जब-तब यह कहानियाँ थम जाती हैं – अधिक तकलीफदायक अथवा ज्यादा बेतुकी होने की वजह से या कोई प्रतिक्रिया न मिलने के कारण। अपने किस्सों के बिखरे तारों को पिरोने के लिये इस पन्ने का इस्तेमाल करें। और फिर यहाँ अपनी बात कहना बचत भी लिये है। आपको अपनी कथा छपवाने के लिये कोई पैसे खर्च नहीं करने पड़ेंगे।

राउरकेला स्टील प्लान्ट

सरकारी दफ्तरों के जरिये गरीबों की भलाई वाली रैडक्रास लाटरियाँ आदि थोपना हरियाणा में सामान्य बात है। फरीदाबाद में एस्कोर्ट्स हो, झालानी टूल्स हो, बाटा हो या और किसी फैक्ट्री में लाल-पीले-काले-हरे-तिरंगे-पंचरंगे झन्डे वाली यूनियन, मजदूरों की तनखा से पैसे काट कर मैनेजमेंटें रुपये इक्ट्ठे कर लीडरों को देती हैं। जब-तब किसी लीडर-वीडर के लिये वरकरों का एक दिन का वेतन काट कर मैनेजमेंटें लीडरों को देती हैं। वालन्टरी तौर पर, अपनी राजी से दिया गया चन्दा इन्हें कहा जाता है। अपील-आग्रह का मतलब आदेश-फरमान होता है और ना-नुकुर पर सजा का प्रावधान है।

इस मायने में उड़िसा हरियाणा से भिन्न नहीं है। सरकारी अस्पतालों के लिये राउरकेला स्टील प्लान्ट के तीस हजार मजदूरों के वेतन से 100–100 रुपये काटने की ऐसी ही अपील 9 जून को जिला कलेक्टर ने की है और स्टील प्लान्ट के मैनेजिंग डायरेक्टर ने 13 जून को उस अपील को दोहराया है। अहसान - कर्तव्य - सुविधाभोगी - कुर्बानी - बड़ाई - पुण्य काम - सलाह आदि शब्दों-फिकरों से सजी यह अपीलें कड़वी गोली पर चाशनी के तौर पर लाटरी में 2 लाख की मारुति कार के पहले इनाम की बात भी लिये हैं। स्टील प्लान्ट मैनेजमेंट और सब/अधिकतर यूनियनों-एसोसियेशनों का जिला कलेक्टर के इस फरमान को पूरा समर्थन है। राहत के तौर पर 50–50 रुपये की दो किश्तों में जून और जुलाई के वेतन में से कटौती का प्रस्ताव है। और, किसी निजी कारण से जो मजदूर यह दान नहीं दे सकते वे 24 जून तक अपने डिपार्टमेंट हैड के माध्यम से अकाउन्ट्स विभाग को सूचना दें ... दोनों अपील-हुक्म एक ही पन्ने पर आगे-पीछे अंग्रेजी में हैं जिसे ज्यादातर मजदूर नहीं समझते। वैसे, 20 जून तक डिपार्टमेंटों में यह अपीलें नहीं भेजी गई थी लेकिन वेतन में कटौती का मजदूरों को पता लग गया। राउरकेला स्टील प्लान्ट के अधिकतर मजदूरों को इस जबरन कटौती पर एतराज है। पैसे नहीं काटने वाली मजदूरों की एप्लिकेशन मैनेजमेंट रिसीव ही नहीं कर रही. . .

(राउरकेला स्टील प्लान्ट के एक मजदूर के पत्र तथा संलग्न कलेक्टर व मैनेजिंग डायरेक्टर की अपीलों-आदेशों से उपरोक्त मैटर तैयार किया है।)■

आप-बीती एस्कोर्ट्स वरकर की... (पेज तीन का शेष)

रहता था। मैं सामाजिक कार्यों में बहुत रुचि रखता हूँ और साँस्कृतिक मण्डली का मैं सक्रिय सदस्य था। 1983 में हमने मण्डली को एक साँस्कृतिक क्लब में बदल दिया और नाटक भी खेलने शुरु किये। 1987–88 में क्लब बिखर गया। मनोरंजन की इच्छा होते हुये भी अब समय नहीं मिलता। बैठने का कोई निश्चित ठिकाना भी नहीं है। पुराने साथी बिछुड़ गये हैं और नयों का कोई जोड़ अभी बना नहीं है। ऐसे में अपने को मात्र रेडियो सुनने, टेलीविजन देखने व अखबार पढने तक सीमित रखने को मजबूर हूँ।

जीवन में किस घटना ने आपको बहुत प्रभावित किया है?

बचपन में ही मेरे पिताजी गुजर गये। कुछ दिन बाद मेरे तीनों चाचा न्यारे हो गये। घर की अन्य चीजों की तरह मेरी माँ और हम दो भाइयों का भी बँटवारा हुआ। मेरे बड़े भाई को बड़े चाचा के साथ, माँ को बीच वाले चाचा के साथ और मुझे छोटे चाचा के साथ मजबूरन रहना पड़ा। चाचा के साथ नहीं पटने पर मैं ननिहाल चला गया और वहाँ से पाँचवी पास कर गाँव लौटा और एक लड़के से छठी की किताबें ली पर चाचा ने आगे पढाने से मना कर दिया। कुछ दिन बाद माँ की भी मृत्यु हो गई। एस्कोर्ट्स में नौकरी लगने के बाद मैंने भाई को यहाँ बुलाया और उनकी नौकरी लग भी गई पर आज हम भाइयों में प्यार के बावजूद कड़वाहट भरे सम्बन्ध हैं। एक-दूसरे के यहाँ आना-जाना तक नहीं होता। रिश्ते-नातों की इस हकीकत से मुझे बहुत दुख होता है।■

विक्टोरिया जूट मिल

पश्चिम बँगाल स्थित विक्टोरिया जूट मिल को 13 महीनों की तालाबन्दी के बाद चालू हुये 5 महीने हुये थे कि 18 मई 95 को वहाँ फिर लॉकआउट कर दिया गया है। तालाबन्दी मिल में आम बात हो गई है। इन दस-बारह साल में एक भी साल ऐसा नहीं है जिसमें विक्टोरिया जूट मिल पाँच-छह महीनों से ज्यादा चली हो। विक्टोरिया की एक बुजुर्ग महिला मजदूर के अनुसार पहले मजदूर हड़ताल करते थे जबकि अब मैनेजमेंटें हड़ताल करती हैं।

इन 13 वर्षों में 13 से ज्यादा बार यह मिल बन्द हो चुकी है और फिर चालू करने के लिये इतने ही समझौते हुये हैं। हर समझौते ने मजदूरों को हानि पहुँचाई है। मैनेजमेंट पर हर मजदूर का दस हजार रुपया देय है, मजदूरों का मैनेजमेंट पर कुल 19 करोड़ रुपये बकाया है। इस बार तालाबन्दी खत्म करने के लिये मैनेजमेंट ने हर मजदूर के वेतन में से 5 महीनों तक प्रतिदिन 15 रुपये के हिसाब से काटने और फिर 5 रुपये की किश्तों में लौटाने का प्रस्ताव किया है। पश्चिम बँगाल में जूट मिलों में मजदूरों के वेतन में कटौती आम बात हो गई है और उतनी ही आम बात यह भी हो गई है कि काटे पैसे लौटाने के आश्वासन-समझौते पूरे नहीं किये जाते।

घटनाक्रम के इस सिलसिले में गुस्से से उबलते विक्टोरिया जूट मिल मजदूरों ने कभी यूनियनों के दफ्तरों को आग लगाई है तो कभी मैनेजमेंट और नेताओं की पिटाई की है।

18 मई को विक्टोरिया में जब तालाबन्दी की गई तब इलाके में नगरपालिका के चुनाव का प्रचार चल रहा था। मजदूरों की बस्ती में नलका लगाया जा रहा था . . . हवा खाओ , पानी पीओ और वोट दो !

(विक्टोरिया जूट मिल के एक मजदूर द्वारा भेजे खत और संलग्न चैलेन्ज अखबार की प्रतियों से उपरोक्त मैटर तैयार किया है।)■

कुछ मजदूरों का खत

हम सभी श्रमिक पिछले 5 साल से काम कर रहे हैं। न तो आज तक ई एस आई सुविधा है, न प्रोविडेन्ट फन्ड है और फैक्ट्री एक्ट सम्बन्धित सुविधायें नहीं मिल रही हैं। हम अधिकारियों को कई बार सूचना दे चुके हैं लेकिन मैनेजमेंट साँठ-गाँठ करके सबको मूक कर देती है। अतः विवश हो कर यह पत्र लिख रहे हैं। फरीदाबाद में इस समय भी ऐसी फैक्ट्री मौजूद है जिसका मुनाफा करोड़ों रुपये प्रतिमाह हो, जहाँ 70–80 श्रमिक कार्यरत हों, जिसकी एक टरबाइन की कीमत तीन करोड़ रुपये हो, चोर बाजारी कर रही हो, बिजली चोरी करती हो लेकिन अधिकारी चुपचाप बिना कुछ कार्रवाई किये गहरी नींद में सो रहे हों। अतः जनता तक जानकारी पहुँचाने के लिये मजदूर समाचार में प्रकाशित करना। यह सूचना जल्दी से जल्दी समाचार पत्र में प्रकाशित करना क्योंकि दबाव दे कर मैनेजमेंट रिजाइन ले रही है।

(सम्पादकीय टिप्पणी : खत लिखने वाले मजदूर साथी फैक्ट्री का नाम लिखना भूल गये।) ■

रुटीन को एक्सीडैन्ट कहते हैं.... (पेज एक का शेष)

फैक्ट्रियों में भट्टियों - बायलरों की भरमार, मैटेरियल जल्दी तैयार करने के लिये स्टीम - गर्म हवा का छोड़ा जाना, खौलते तेल - उबलते पानी - गर्म कास्टिक के टैंक गर्मियों में मजदूरों की हालत तन्दूरी मुर्गे से भी बदतर बना देते हैं। ऐसे में वरकर परमानेन्ट हों चाहे कैजुअल या ठेकेदारों के, एग्जास्ट फैन - पँखे - कूलर के लिये मजदूरों द्वारा बार-बार प्रयास नहीं करने का मतलब अपनी मौत को नजदीक बुलाना है। मैनेजमेंटों द्वारा जल्दी-से-जल्दी प्रोडक्शन के लिये टेम्परेचर बढाने का विरोध नहीं करना अपने हाथ - अपनी जान दाँव पर लगाना है।

(अगले अंक में जारी रहेगा)

बखान : आप-बीती का, बातचीत में (7)

एस्कोर्ट्स फस्ट प्लान्ट के एक वरकर से तीन दिन उसके घर पर विस्तृत बातचीत हुई। उस कालोनी में एस्कोर्ट्स के कई मजदूर रहते हैं पर वहाँ सीवर लाइन तो क्या, घरों के गन्दे पानी के निकास के लिये नालियाँ तक नहीं हैं। हर गली के घरों का गन्दा पानी और कूड़ा खाली पड़े प्लाटों में इक्ट्ठा होता रहता है। गलियाँ कच्ची हैं। गलियों को जोड़ने वाली सड़कें भी कच्ची हैं। बरसात में पानी और कीचड़ के कारण आने-जाने में बहुत दिक्कत होती है। शिफ्ट, ओवर स्टे और पार्ट टाइम में रोज 15-16 घन्टे काम करके ही वह उस कालोनी में घर बना पाया है और खर्च चला पा रहा है। पत्नी और बच्चों को समय नहीं दे पाता। इससे पत्नी अक्सर बीमार रहती है – उन्हें सिर दर्द व मानसिक तनाव रहता है और शोर बिलकुल बर्दाश्त नहीं होता। बच्चों के आवारा हो जाने का डर ऊपर से है। इन सब के बावजूद एस्कोर्ट्स फस्ट प्लान्ट के मजदूर ने हमसे बातचीत में बहुत रुचि ली और कई बार बात करते-करते भावुक हो उठे थे।

मैं 12 साल की उम्र से नौकरी कर रहा हूँ। पाँचवी पास करते ही मुझे अपने गाँव से 50 मील दूर एक दुकान पर नौकरी करनी पड़ी। वहाँ बसें रुकती थी और यात्री खाना खाते, चाय पीते और सामान खरीदते थे। दुकानें रात को चार-पाँच घन्टे ही बन्द होती थी। दुकान पर ही मेरा खाना-पीना-सोना था और मुझे 16-17 घन्टे काम करना पड़ता था। दो साल वहाँ नौकरी करने के बाद मैं अपने मामा के पास दिल्ली आ गया। दिल्ली में एक दुकान पर एक साल काम करने के बाद मैं यहाँ फरीदाबाद में अपने गाँव के एक भाई साहब के पास आ गया। यहाँ मैंने कई वर्कशापों में काम किया और फिर डी डी फोरजिंग में लगा था। 1971 में मैं एस्कोर्ट्स फस्ट प्लान्ट में लगा और तबसे यहीं काम कर रहा हूँ। 12 साल का था तब भी 15-16 घन्टे रोज काम करता था और अब 46 साल का हो गया हूँ तब भी रोज 15-16 घन्टे काम करता हूँ। दुकान पर काम करते समय माँ और भाई की बहुत याद आती थी। अब यहाँ रहते हुये भी पत्नी-बच्चों के साथ बिताने के लिये समय नहीं है।

एस्कोर्ट्स फस्ट प्लान्ट का माहौल कैसा है?

हमारी बढती उम्र के साथ हम पर वर्क लोड भी बढाया जा रहा है। अधिकतर मशीनें पुरानी हैं पर हमें नई मशीनों के बराबर प्रोडक्शन देनी होती है। पुरानी मशीनें ठीक से नहीं चलती और अक्सर खराब हो जाती हैं। ब्रेक डाउन होने पर दूसरी डिपार्टमेंटों के वरकर भागे-भागे आते हैं और माल माँगने लगते हैं। रिक्वेस्ट करते हैं। मेन्टेनैन्स वरकरों को मशीन को काम चलाऊ की स्थिति में करने को मजबूर करते हैं। यह सब हम लोग इनसेन्टिव के चक्कर में करते हैं। यह जानते हुये भी खराब मशीन पर काम करते हैं और मशीन की रफ्तार बढाते हैं कि ऐसे में चोट लगने का खतरा बढ जाता है। पहले फोरमैन-सुपरवाइजर काम जल्दी करने को बोलते थे परन्तु अब इनसेन्टिव काम जल्दी-जल्दी करने को बोलता है। फस्ट प्लान्ट की शोकर डिवीजन में हम 500 मजदूर काम करते हैं। 8-9 साल पहले 40,000 शोकर बनाना हमारे लिये निर्धारित नोरमल प्रोडक्शन था। आटोमेशन के बाद नोरमल प्रोडक्शन 80,000 कर दी गई। फिर इसे और बढा कर मैनेजमेंट ने 1,20,000 को नोरमल प्रोडक्शन निर्धारित कर दिया। इनसेन्टिव के चक्कर में काम की अपनी रफ्तार बढा कर हम दो लाख शोकर बना देते हैं और महीने में एक हजार रुपये इनसेन्टिव के लेते हैं।

इधर एस्कोर्ट्स मैनेजमेंट दो लाख रुपये महीना तनखा पर देवराज नाम के वाइस प्रेसीडेन्ट को लाई है। साहब ने आते ही एस्कोर्ट्स फस्ट प्लान्ट में नोरमल प्रोडक्शन बढ़ाने के फरमान जारी कर दिये हैं। शोकर डिवीजन वरकरों से कह रहे हैं कि एक लाख बीस हजार पीस की जगह दो लाख नोरमल प्रोडक्शन होगा। इसका मतलब मैनेजमेंट द्वारा हर वरकर से महीने में मिलने वाले उसके इनसेन्टिव के एक हजार रुपये हड़पना है। 15-16 मार्च से एस्कोर्ट्स फस्ट प्लान्ट के मजदूरों का वाइस प्रेसीडेन्ट देवराज के खिलाफ गुस्सा भड़का हुआ है। पूरे प्लान्ट के वरकरों ने उन्हें घेर कर सवाल-जवाब किये हैं। मैनेजमेंट और लीडरों को घेरने व सवाल-जवाब का यह सिलसिला चल ही रहा था कि मैनेजमेंट ने एग्रीमेंट अनुसार अप्रैल की तनखा में 175 रुपये नहीं बढा कर पँगा लिया। पूरे प्लान्ट के वरकरों ने फिर वाइस प्रेसीडेन्ट को घेरा। मजदूरों में फूट डालने के लिये एस्कोर्ट्स मैनेजमेंट ने मई की तनखा में फस्ट प्लान्ट की ट्रैक्टर डिवीजन के वरकरों की तनखा में 175 रुपये जोड़ दिये परन्तु शोकर डिवीजन वरकरों को नहीं दिये। इस पर शोकर डिवीजन के वरकरों ने वाइस प्रेसीडेंट को फिर घेरा।

इधर हम शोकर डिवीजन के मजदूरों ने डिपार्टमेंट वाइज 20-20 वरकरों के समूह में वाइस प्रेसीडेंट से मिलने का तय किया। जून के तीसरे हफ्ते में 20-20 के समूह में हम रोज वाइस प्रेसीडेन्ट के पास जा रहे हैं और एग्रीमेंट के अनुसार तनखा में अप्रैल से 175 रुपये बढाने की डिमान्ड कर रहे हैं। वाइस प्रेसीडेन्ट हमारे सामने बोर्ड पर एक-एक सैकेन्ड का हिसाब लगाना शुरु कर देता है और एग्रीमेंट में ऐसी-ऐसी बातें लिखी हुई बताने लगता है कि हम लोग चकित हो जाते हैं।

एस्कोर्ट्स में एग्रीमेंटों की फरीदाबाद में बहुत बड़ाई की जाती है। क्या असलियत इससे अलग है?

हमारे यहाँ हर एग्रीमेंट में वर्क लोड बढाया गया है। हर बार एग्रीमेंट के टाइम मैनेजमेंट हमारे साल-छह महीने खा जाती है। पहले ओवर टाइम डबल रेट से मिलता था पर 1990 की एग्रीमेंट के बाद यह सिंगल रेट से मिलता है। इसे मैनेजमेंट ओवर स्टे कहने लगी है और एस्कोर्ट्स में ओवर टाइम आम बात है। एग्रीमेंट द्वारा ओवर टाइम को ओवर स्टे कहने से एस्कोर्ट्स के हर मजदूर को हर महीने एक हजार रुपये का नुकसान हो रहा है। मैंने विरोध में दो-तीन महीने ओवर स्टे नहीं लगाया परन्तु कम्पलसरी होने की वजह से चार्जशीट के डर और पैसे की तंगी के कारण मैं भी यह करने लगा हूँ।

अब देखो, आज भी हमें गुड़ के लिये प्रतिदिन दस पैसे दिये जाते हैं ! 1981-82 में हमें प्रतिदिन डेढ पाव दूध और 100 ग्राम गुड़ दिया जाता था। इनके बदले में मैनेजमेंट - यूनियन एग्रीमेंट द्वारा गुड़ के लिये दस पैसे रोज और दूध के लिये 35 रुपये महीना कर दिये गये। इस एक मद में ही हमें 100 रुपये महीना नुकसान हो रहा है। हम तीन बार यूनियन को और तीन बार मैनेजमेंट को लिख कर इसे बदलने की डिमान्ड कर चुके हैं पर वे इसे छोटी बात कह कर टाल देते हैं।

हमने दो सूती वर्दियों की जगह दो टेरीकाट वर्दी डिमान्ड की तो 1990 की एग्रीमेंट में वर्दी ही खत्म कर दी गई और शायद सिलाई के लिये तीन सौ रुपये दे दिये गये !

पाँच साल की सर्विस पर घड़ी देना बन्द कर दिया गया है। दस साल की सर्विस पर 1500 रुपये के तीन बैन्ड वाले रेडियो के बदले 1000 और 15 साल की सर्विस पर 2400 रुपये की 5 ग्राम सोने की अँगूठी के बदले 1500 रुपये की एग्रीमेंट हुई है।

सब्सीडी की वजह से जब-तब कैन्टीन में अच्छा खाना खा लेते थे। यहाँ भी दस पैसे 100 ग्राम गुड़ के वाली बात मैनेजमेंट ने लागू कर दी है। एस्कोर्ट्स मैनेजमेंट को प्रति मजदूर प्रतिदिन कैन्टीन में बीस रुपये से ऊपर सब्सीडी देने की नौबत आई तो 1993 की एग्रीमेंट द्वारा 10 रुपये दे कर मैनेजेंट मुक्त हो गई।

फैक्ट्री में विशेष चिन्ता की कोई बात है क्या?

हाँ, एस्कोर्ट्स में कैजुअल वरकरों और ठेकेदारों के मजदूरों की बढ़ती संख्या से हमारी नौकरी पर मंडराता खतरा बढता जा रहा है। एक रिटायर हुआ सुपरवाइजर ठेकेदार का वरकर बन कर हमारी थर्ड शिफ्ट में मशीन चलाता है और उसके साथ बाकी सब कैजुअल वरकर काम करते हैं। शोकर डिवीजन में एक चौथाई काम ठेकेदारों के व कैजुअल वरकर करने लगे हैं। पूरे पेन्टशॉप को ठेकेदार के वरकर चलाते हैं। ग्राइन्डिंग डिपार्टमेंट का हाल नम्बर 13 में पूरा काम ठेकेदार के वरकर और अप्रेन्टिस वरकर करते हैं। टी एफ एफ के लिये हार्ड क्रोम सैकेन्ड प्लान्ट में एक सुपरवाइजर और एक परमानेन्ट वरकर को छोड़ कर बाकी 18 वरकर ठेकेदार के व कैजुअल वरकर हैं। टी सीरीज के शोकर का काम भी ठेके पर कराया जा रहा है।

मनोरंजन की जरूरत महसूस करते हैं क्या?

इच्छा होती है और इसके लिये 1980 में हमने एक सांस्कृतिक मण्डली बनाई थी। उसके 35 सदस्यों में हम विभिन्न फैक्ट्रियों के वरकर थे। आपस में पैसे डाल कर हमने एक दरी, हारमोनियम, ढोलक, चिमटा, डफली, झाँझर खरीदे थे। हम हर रविवार को बारी-बारी से सदस्यों के घर बैठते थे। गाना-बजाना और किस्से-कहानियों के संग-संग अपनी बातें भी हम एक-दूसरे के सामने रखते थे। एक-दूसरे के सुख-दुख में शरीक होते थे। पढने के लिये हमने एक छोटी-सी लाइब्रेरी बनाई थी। किताबें व अन्य सामान मेरे घर पर

(बाकी पेज दो पर)

अजन्ता प्रिन्ट्स

ईस्ट इंडिया कॉटन मिल के अजन्ता प्रिन्टिंग खाते में 27 प्रिन्टिंग टेबल हैं जिन पर एक शिफ्ट में 200 मजदूर काम करते हैं। 17 जून को शाम चार बजे मैनेजमेन्ट ने टेबल तुड़वाने शुरु किये तो ढाई से साढे दस बजे वाली शिफ्ट के मजदूरों ने विरोध किया और मैनेजमेंट को टेबल तोड़ने से रोक दिया। 18 को सन्डे की छुट्टी थी। चिमनी साफ करने का कारण बता कर मैनेजमेंट ने 19 की भी छुट्टी कर दी। 20 जून को सुबह साढे छह बजे की शिफ्ट वाले मजदूर जब ड्यूटी पर पहुँचे तब उन्होंने देखा कि मैनेजमेंट ने पीछे से तीन टेबल तुड़वा दिये थे तथा चार और पर नम्बर लगाया था। मजदूरों ने टेबल तोड़ने रुकवा दिये और इक्ट्ठे हो कर परसनल मैनेजर के पास गये। साहब ने कहा कि यूनियन से प्रिन्टिंग टेबल तोड़ने का समझौता हुआ है – बात करनी है तो जा कर लीडरों से करो। अजन्ता के वरकर प्रधान के पास गये तो उसने मजदूरों से गाली-गलौज की। लेकिन वरकरों ने अजन्ता में टेबल तोड़ना रुकवा दिया।

21 जून को सुबह साढे छह बजे ड्यूटी के लिये मजदूर फैक्ट्री पहुँचे तब ईस्ट इंडिया मैनेजमेंट ने 5 वरकरों का गेट रोक दिया। अजन्ता मजदूरों ने इस पर चक्का जाम कर दिया। सारी धौंस-धपट्टी के बावजूद 9 बजे तक भी काम शुरु नहीं हुआ तब परसनल मैनेजर ने उन 5 मजदूरों को अन्दर लेने का आश्वासन दिया। जिन वरकरों का गेट रोका था वे सब फैक्ट्री के अन्दर आ गये तब 12 बजे अजन्ता में काम शुरु हुआ।

अजन्ता में प्रिन्टिंग टेबल तोड़ना रुक गया है। कोई मजदूर नौकरी छोड़ने को तैयार नहीं है।■

होती लाल

बी एल कन्टेनर्स, प्लाट 87, सैक्टर - 24 में गत्ते बनते हैं। तीन साल से होती लाल इस फैक्ट्री में कैजुअल वरकर के तौर पर काम कर रहा था। हाजरी कार्ड, पे स्लिप, ई एस आई कार्ड के होती लाल ने दर्शन नहीं किये। साढे आठ घन्टे रोज काम पर महीने में सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन 1325 रुपये देने की बजाए होती लाल को मैनेजमेंट 850 रुपये देती थी। इतने रुपयों में तो पतली दाल भी मुश्किल रहती है इसलिये होती लाल आमतौर पर सुबह साढे आठ से रात ग्यारह बजे तक फैक्ट्री में काम करता था। सन्डे को छुट्टी रहती पर वरकर उस रोज भी दो पैसे के लिये काम करते। इतवार, 18 जून को होती लाल और कुछ अन्य मजदूर बी एल कन्टेनर्स में काम कर रहे थे। लेई बनाने की भट्टी के पास मशीन में करन्ट आ रहा था। मशीन पर काम करने वाले वरकर ने इस पर वहाँ काम करने से मना कर दिया। फोरमैन ने कहा कि कोई करन्ट-वरन्ट नहीं आ रहा और होती लाल को भट्टी पर से गरम-गरम लेई लाने को कहा। लेई भरने के लिये होती लाल ने भट्टी को छूआ ही था कि उसमें भी आ रहे बिजली के करन्ट ने उसे पलट कर मारा। 22 साल के होती लाल की मौके पर ही मौत हो गई।

कोसी के पास बड़ी बठैन गाँव में जन्मे होती लाल की 24 सैक्टर की बगल में स्थित पुराने गाँव मुजेसर में रिश्तेदारी है। खबर लगते ही रिश्तेदार और अन्य लोग फैक्ट्री पहुँचे। पुलिस भी आ गई। लोगों के रुख को देख कर पुलिस को केस दर्ज करना पड़ा और पोस्टमार्टम के लिये लाश अस्पताल ले जाई गई। 19 जून को लाश को शमशान ले जाने की बजाय फैक्ट्री अथवा डी सी आफिस ले जाने के लिये होती लाल के प्रियजनों को अड़े देख कर पुलिस ने बी एल कन्टेनर्स मैनेजमेंट को बुलाया। नेता भी बीच में आये। मैनेजमेंट की तरफ से भडाना वकील आया। मुआवजे की चर्चायें हुई। मैनेजमेंट ने ई एस आई के कागजात बनवा कर दिये और 40 हजार रुपये दिये।

बाद में बी एल कन्टेनर्स मैनेजमेंट कह रही थी कि मामले को तूल दिये जाने की वजह से दस हजार पुलिस को, दस हजार पोस्टमार्टम करने वाले डॉक्टर को, दस हजार वकील को, दस हजार ई एस आई के कागजात बनाने वाले को देने पड़े और केस पर भी खर्च करने पड़ेंगे जबकि मैनेजमेंट तो होती लाल के माँ-बाप को ही यह एक लाख रुपये देना चाहती थी। होती लाल के प्रियजनों का कहना है कि लोगों का दबाव नहीं होता तो मैनेजमेंट 40 हजार भी नहीं देती। लोगों के दबाव से ही 304 धारा के तहत केस दर्ज हुआ और इस केस से छुटकारे के लिये, इसके दायरे से निकलने के लिये ही मैनेजमेंट ने होती लाल के ई एस आई कागजात बनवाये हैं। 40 हजार मानवीयता के कारण दिये, होती लाल के माँ-बाप को पेन्शन दिलाने के लिये मानवीयता की वजह से ई एस आई कागजात बनवाये वाली मैनेजमेंट की बातें बकवास हैं।■

एस्कोर्ट्स में मौत

बड़े साहबों के दफ्तरों में एयरकन्डीशनर लगे हैं और एयरकन्डीशनरों की रिपेयर के लिये एस्कोर्ट्स मैनेजमेंट ठेकेदारों को कोनों-कबाड़ों में जगह देती है। एस्कोर्ट्स फस्ट प्लान्ट में पुराने स्टोर की छोटी-सी जगह में कबाड़ा भरा था और उसके एक कोने में ठेकेदारों के वरकर एयरकन्डीशनर रिपेयर करते थे। 3 जून को रहेजा - खुल्लर ठेकेदारों के दो वरकर, सुरेन्द्र और देवेन्द्र वहाँ काम कर रहे थे कि दिन में 2-3 के बीच वहाँ आग लगी और धमाका हुआ। उस समय एस्कोर्ट्स फस्ट प्लान्ट में काम कर रहे एक परमानेन्ट वरकर ने बताया कि फैक्ट्री में शोर होता ही रहता है इसलिये किसी ने ध्यान नहीं दिया। फटे पेट से निकली आँतड़ियाँ लिये शीशा तोड़ कर बाहर निकले देवेन्द्र को देख कर टी आई डिपार्ट से 13 नम्बर हाल जा रहे एक क्लर्क ने सूचना दी तब मजदूर वहाँ पहुँचे। देवेन्द्र के यह कहने पर कि अन्दर एक और है, आग पर काबू पाने के लिये मिट्टी इस्तेमाल करते मजदूर बुरी तरह जल गये सुरेन्द्र को निकाल कर लाये। एक कैजुअल वरकर यह करते हुये झुलस गया। फायर ब्रिगेड की गाड़ी ने आ कर आग बुझाई। ठेकेदारों ने बुरी तरह घायल मजदूरों को अपने वरकर मानने से इनकार कर दिया और कहा कि वे विजिटर थे। यह तो मजदूरों की भीड़ के तेवर देख कर मैनेजमेंट व लीडरों ने ठेकेदारों को धमका-चमका कर मामले को सम्भाला और एस्कोर्ट्स मैनेजमेंट एम्बुलैन्स में फैक्ट्री के अन्दर से घायल मजदूरों को सरकारी बी के अस्पताल ले गई।

डॉक्टरों ने तत्काल सुरेन्द्र को दिल्ली सफदरजंग अस्पताल भेज दिया। देवेन्द्र कहीं भेजने लायक स्थिति में नहीं था इसलिये बी के में ही आपरेशन किया गया। 3 जून की रात को देवेन्द्र की मृत्यु हो गई। दिल्ली भेजे सुरेन्द्र की भी मृत्यु हो गई। 45 वर्षीय सुरेन्द्र इलेक्ट्रिशियन था। 19 वर्षीय देवेन्द्र 7-8 महीने एस्कोर्ट्स थर्ड प्लान्ट में कैजुअल वरकर के तौर पर काम कर चुका था और ब्रेक की वजह से एस्कोर्ट्स फस्ट प्लान्ट में ठेकेदार के मजदूर के नाते मई के आरम्भ से काम कर रहा था।

देवेन्द्र के पिता बालमुकुन्द तीन नम्बर ई एस आई अस्पताल में ड्राइवर हैं। एक दिन एक यूनियन लीडर उनके घर आया और आश्वासन दे गया तथा तेरहवीं के दिन एस्कोर्ट्स फस्ट प्लान्ट की परसनल डिपार्टमेंट का एक अधिकारी उपस्थित हो कर ई एस आई से पेन्शन दिलवाने और मैनेजमेंट व ठेकेदारों की तरफ से एक लाख रुपये (75+25) का भरोसा दे गया। बस। 29 जून तक बालमुकुन्द जी को देवेन्द्र की मई की तनखा भी नहीं दी गई थी, एक लाख और ई एस आई के कागजात तो रहे बहुत दूर की बात। इस बीच बालमुकुन्द जी जब भी एस्कोर्ट्स फस्ट प्लान्ट गये हैं, फैक्ट्री गेट पर उन्हें कह दिया जाता है कि साहब लोग मीटिंग में बिजी हैं।

बी एल कन्टेनर्स में 18 जून को करन्ट लगने से मरे होती लाल के प्रियजनों द्वारा पोस्टमार्टम के बाद लाश को शमशान की बजाय फैक्ट्री गेट अथवा डी सी आफिस ले जाने पर अड़ने की वजह से मैनेजमेंट ने ई एस आई कागजात और 40 हजार रुपये 19 जून को ही उसके माता-पिता को दिये। ऐसा ही तरीका देवेन्द्र के प्रियजनों द्वारा नहीं अपनाया जाना क्या उनकी गलती नहीं है? आटोपिन फैक्ट्री में 5 अप्रैल 1990 को मरे एक कैजुअल वरकर की लाश को मैनेजमेंट ने अस्पताल से रफा-दफा करने की कोशिश की पर मजदूर लाश को फैक्ट्री गेट पर ले आये। लाश के इर्द-गिर्द एकत्र हो आटोपिन के परमानेंट वरकरों ने दो शिफ्ट चक्का जाम रख कर मैनेजमेंट को कैजुअल वरकर के परिवार को 60 हजार रुपये देने को मजबूर किया था। एस्कोर्ट्स के मजदूरों को, अन्य मजदूरों को आटोपिन फैक्ट्री वरकरों के उस कदम से सीखने की जरूरत है या नहीं?■

हमारा पता है –
मजदूर लाइब्रेरी
आटोपिन झुग्गी
फरीदाबाद – 121001

19 जुलाई को सुबह दस बजे, 20 को शाम 5 बजे और 21 जुलाई **को रात 8 बजे इस अखबार के जुलाई अंक पर मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी में चर्चा होगी। हर कोई इसमें भाग ले सकता है।**

जो चाहते हैं कि यह अखबार ज्यादा लोग पढ़ें, ऐसे दो हजार मजदूर अगर हर महीने दो-दो रुपये दें तो इस अंक की तरह दस हजार प्रतियाँ फ्री बँट सकेंगी।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० ऑफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR FBD/3
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी – 548 नेहरू ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।